- ढिमरियाई नृत्य

ढिमरियाई ढीमर जाति का पारम्परिक नृत्य है। केवल ढीमर लोगों के इस नृत्य में प्रवृत्त होने के कारण इस नृत्य ढिमरियाई नामकरण हुआ। जाति गत नृत्यों के प्रादुर्भाव में नृत्य के नामकरण की यह प्राचीन परिपाटी रही है। जैसे कोलहाई, गड़रियाई आदि वैसे ही ढिमरियाई। बुंदेलखंड में केवल कानड़ा नृत्य है जिसका एकनाम नृत्य विधा पर पड़ा, वह कनडियाई है। लोक में यह सुविधाजनक स्थिति के कारण प्रचलन में आया है, जिस जाति में जो नृत्य होता है, उसे उसी जाति का नाम दे दिया जाता है। यह सच भी है कि ऐसे नृत्यां में जातिगत विशेषताएं भी सबसे अधिक होती हैं, जो ढिमरियाई में भी दिखाई देती हैं। भारत में वर्ण व्यवस्था के कारण जातिगत नृत्य जन्मे। इसमें जाति की अलग पहचान बनाने की इच्छा का प्रबल होना हो सकता है, जातिगत संस्कृति के विकास का भी मूल कारण यही हो सकता है। पर इससे इतना जरूर हुआ कि भारत में बहुत सी जातिगत कलाओं को विकसित होने का अवसर और अवकाश मिल गया। भारत में नृत्य कला की विविधता और समृद्धि का कारण भी यही है।

बुंदेलखंड में ढीमर जाति का अपना एक इतिहास रहा है। ढीमर मूलतः मछली पकड़ने वाली जाति के रूप में प्रतिष्ठित है। ढीमरों का नदी और पानी से गहरा रिश्ता है। ये लोग पानी का काम जैसे घरों में पानी भरना, नाव चलाना, मछली की जाल का डालना आदि प्रारंभ से करते आये हैं। इसलिये इनके नृत्य गीतों में नदी का संगीत सुनाई देता है। नृत्य में जाल में फँसी मछली की तड़प अथवा नाव खेते समय टकराती लहरों की हरहराट, हवाओं की सरसराहट, एक केवट अथवा मल्लाह की मल्हारें, जलधारा सा वेग पानी के तल सी गहराई और जल ही जीवन की गाथा की अनुगूंजें सहज रूप में सुनाई देती है। ढिमरियाई नृत्य की संरचना संभवतया ढीमर–जीवन की इन्हीं गतिविधियों से हुआ है।

वर्ण व्यवस्था में ढीमर जाति को चौथा दर्जा दिया गया है, लेकिन उनके कामों ने उन्हें उच्च वर्ण और सम्पन्न परिवारों के जीवंत सम्पर्क में रहने की अनुमति प्रदान की है। ढीमर जाति के लोग प्राचीनकाल में राजप्रासादों में पानी भरने का काम करते थे। कई परिवार तो आज भी पानी भरने–पिलाने का काम करते हैं। मछली मारने का काम तो करते ही हैं। शाम

को जब थके हारे लौटते थे, तब अपनी थकान दूर करने के लिये कुछ गुनगुनाते थे, नाचते गाते थे, देर रात तक यही क्रम चलता था। इसी शौक से ढीमरों का गुनगुनाना गीत बन गये और उछलना–कूदना नृत्य बन गया। यहीं से ढिमरियाई नृत्य का प्रादुर्भाव हुआ। ढिमरियाई नृतय की दूसरी अवधारणा यह है कि इस नृत्य का जन्म ही नदी किनारे हुआ। ढीमर लोग मछली पकडने के लिये नालों–नदियों के किनारे जाल बिछाकर घंटों बैठे रहते थे, समय काटने के लिये किसी ने गाना गुनगुनाना शुरू किया, किसी ने बजाना, किसी ने नाचना, किसी ने हाथ से बनाकर सारंगी या रेकड़ी का स्वर जोड़ दिया। इस तरह गाने, बजाने और नाचने से उपजी एक लोक नृत्य विधा, जिसे ढिमरियाई नृत्य कहते हैं। बाद में ढिमरियाई नृत्य में गीत, कथा, संगीत, पदचाप, मुख–हस्त मुद्राएं, वेशभूषा, अनुष्ठान आदि जुड़ते चले गये और ढिमरियाई एक सम्पूर्ण लोक नृत्य की संज्ञा पा गया। इस नृत्य की शारीरिक मुद्राओं में बहुत विविधता होती है। नर्तक का सारंगी के साथ पदों का संचालन तथा पैरों को घुमाकर रखना तथा साथ ही गीतों का उतार चढ़ाव इतना सुंदर होता है कि नृत्य का आकर्षण व गायन वादन को सुमधुर बना देता है।

ढिमरियाई मूलतः व्यक्तिगत नाच है। यह नृत्य गीत प्रधान होता है। इसलिये इसे गीत नृतय कहना उपयुक्त होगा। यह नृत्य पुरूषपरक है। ढिमरियाई में मूलनर्तक एक या दो होते हैं, शेष आठ–दस संगीत की सोहबत में रहते हैं। इस तरह ढिमरियाई 10–12 लोगों की मंडली होती है। सागर, दमोह, छतरपुर आदि में ढिमरियाई नृत्य की अनेक मंडलियां हैं। प्रमुख नर्तक जो गायक भी होता है हाथ में केंकड़ी या रेकड़ी लेता है। संगीत की सोहबत करने वाले साथ अपने वाद्य लेकर एक तरफ बैठे होते हैं।

ढिमरियाई के केन्द्र में रेकड़ी वाद्य होता है। सहयोगी वाद्यो में खंजड़ी, ढोलक, मृदंग, टिमकी, लोटा मंजीरा प्रमुख हैं। आजकल झूला या झींका भी बजाने लगे हैं। कई कलाकारों में रमतूला, ढपला और अलगोजा को भी जोड़ दिया है, जबकि परम्परागत रूप से रेकड़ी, खंजड़ी, मृदंग, टिमकी और लोटा ढिमरियाई के बाजे रहे हैं। रेकड़ी की रूं–रूं, गीत की धुन, खंजड़ी की खनकदार आवाज, मृदंग की मीठी थाप, टिमकी की तीव्र ध्वनि, लोटे की मधुर लय ताल मिलकर जो ढिमरियाई नृत्य संगीत की स्वर लहरियां पैदा करने में सक्षम होती हैं, वह बुंदेलखंड के अद्वितीय लोक संगीत को रचती हैं। इधर ढिमरियाई नर्तक के पैर जमीन पर

टिकते नहीं हैं, उधर ढिमरियाई के लोक स्वर लहरी का जादू लोगों के दिल–दिमाग में छाने लगता है। रेकड़ी, नगड़िया लोटे की आवाज सुनकर लोग घरों से निकलकर ढिमरियाई के अखाड़े में इकट्ठे हा जाते हैं। नर्तक मंडली को घेरकर बैठ जाते हैं या खड़े रहते हैं। ये पारम्परिक श्रोता ढिमरियाई के गीत सुनने और नाच के लटके–झटके देखने इकट्ठा होते हैं।

ढिमरियाई नर्तक मध्य लय में 'अरे हाँ हाँ रे या अरे हो होरे' करके नृत्य शुरू करता है और सोहबत उसे दुहराती है। खंजड़ी वादक हाथ में खंजड़ी बजाते गाते नृत्य में संगत करता है, पर मुख्य आकर्षण का केन्द्र सारंगी वादक नर्तक ही होता है। नर्तक पंजों के बल पर पद चालन करते हुए, मृदंग और खंजड़ी की थाप पर ठुमकते हुए तेजी से नृत्य करता है। द्रुतगति से कुछ दूर तक चलता है, फिर पीछे हटता है। गीत की भावाभिव्यक्ति के लिये हाथ ऊपर नीचे करता है। तीव्र गति में ही गोलाकार घूमता है, चकरी लेता है, यह सब लय ताल के साथ चलता है। ढिमरियाई नर्तक जब एक बार नृत्य में उठान लेता है, तब उसके पैरों की लयात्मक गति और घुंघरूओं की छनकदारी देखने लायक होती है, लोग ठगे से रह जाते हैं, नर्तक दर्शक–श्रोताओं को जैसे अपने नृत्य से बांध लेता है। निरन्तर तेज गति से किये गये ढिमरियाई नृत्य की एक से एक मोहक छबियां लोगों की स्मृतियों में सदा के लिये समा जाती हैं। पूरे मंच पर दौड़कर नृत्य करना, पंजों क बल चलना, ठुमकना, मृदंग की सम ताल पर पदाघात करना, कमर की लय के साथ मोड़ना, हाथों को हाव–भाव के साथ चलाना आदि नर्तक की चपल आंगिक चेष्टाएँ ढिमरियाई नृत्य को कला के दायरे में पहुंचा देती है।

ढिमरियाई के वेशभूषा बहुत कल्पनाशील नहीं होती, गाँव की सामान्य वेशभूषा धोती, कुर्ता, साफा–दुपट्टा, बंडी से ही काम चल जाता है। इसमें कोई ज्यादा बनाव–सिंगार नहीं किया जाता है। अधिक से अधिक रंगीन कुर्ते पर चमकीली राई नृत्य में पहनी जाने वाली जैसी चमकीली बंडी अच्छा दिखने के लिये पहन ली जाती है। ढिमरियाई के संगी साथी वादक भी इसी तरह की वेशभूषा धारण करते हैं। आजकल घुटनों तक परदनी, कुर्ता, सलूका, सिर पर पट्टी, पैरों में घुंघरू, आँखों में काजल आँज कर नर्तक ढिमरियाई नृत्य में उतरते हैं। सांस्कृतिक मंचों पर जाने के कारण आजकल नृत्य गीत और साज--सिंगार के प्रति नर्तकों की सतर्कता बढ़ी हे।

honor 9 Lite

ढिमरियाई में लगभग सभी तरह की बुंदेली लोक धुनें और गीत गाये जाते हैं। यह नृत्य तीज–त्यौहार, जन्म–उत्सव, सागाई–विवाह समारोह आदि खुशी के अवसरों पर विशेष रूप से किया जाता है। इस नृत्य का कोई समय निश्चित नहीं होता है। ढिमरियाई में या तो भक्तिपरक गीत गाये जाते हैं या फिर श्रृंगारपरक समयानुसार कलाकार अपनी मौज मे फरमाईश पर भी गीत गाते हैं। कबीर सूर, तुलसी, मीरा के भजन, देवीगीत, भोला गीत, दादरा, सोहरे, बधावे, गारी, फाग, दिवारी, बारामासी, कजलिया, राई स्वांग, ख्याल हास–परिहास के गीत नृत्य के साथ ढिमरियाई के दर्शक–श्रोता बड़े चाव से सुनते हैं।

ढिमरियाई नृत्य का संबंध शिव के ताण्डव से माना जाता है। इस नृत्य की शारीरिक मुद्राएं शिवजी के ताण्डव नृत्य से मिलती–जुलती हैं। इसलिये ढिमरियाई को शिव–पार्वती का नृत्य भी कहते हैं, जिसमें शिव का जन्म, बारात और शिव पार्वती की महिमा के गीत सबसे अधिक गाये जाते हैं। नृत्य देवी–देवताओं की सुमरनी यानी स्मरण से शुरू होता है।

सदा भुवानी दायनी, सनमुख रहे गनेश।
तीन देव रक्षा करे, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।।

एक ढिमरियाई जनम गीत –

ढीमर घर बाल भये
कि धरे मुडी से जार (जाल)
जल की मछरिया जा कहे,
कि मोरे जी खों पज गये काल।
सो टांगे कंदा पै जार बरूआ कहाँ चले।
धर लऔं कंदा पे जार मछरिया मारन चले।

शिव विवाह

शिवशंकर ब्याहन आये,

जिन अच्छे सजन लजाये।
का कन बाप कुलन नई जिनके,
कौन नाम धराये.....।
आजी दाई माई नई जिनको
कोने दूध पिलाये।
शिवशंकर ब्याहन आये।

वर्तमान में कर्रापुर सागर के चुन्नीलाल रैकवार ढिमरियाई नृत्य के श्रेष्ठ पारम्परिक कलाकर हैं। जिन्हें देश प्रदेश के अनेक सांस्कृतिक केन्द्रों में ढिमरियाई नृत्य ले जाने का श्रेय है।

सैरा नृत्य

सैरा बुंदेलखंड के किसानों का पुरूष प्रधान सामूहिक नृत्य है। बीज बोने के पश्चात् सावन भादौ में खेतों में लहलहाती फसल को देखकर बुंदेलखंड के ग्रामवासी मेघों से सिंचित हरी–भरी धरती के आंगन में सामूहिक रूप से सेहरा नृतय करते हैं।